

कू
लि
कू
ला

मनकलानां, सुगंधीकृतानां, हनरसनना॥ वन्ध १ वा यन गा दय १ उल्लन विन द अरुयं दहिय लय कूल ववन अवनन वहीः
ननू नागा वसिं, कनू १ रु कनू १ यय रु रु उ कनू १ ली जीः रुं रु सा हा ॥ अज कूले कू ना ना मधान निरु मा यः ॥ जव मा रु दिा गु र।

DH51

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

2751/66

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दिव्यनूयौ सूनूयौ च मोमानूयौ वनयदा ॥ वसुधनी वसुधा
नीय वसुधनी कनिवेना ॥ धनमिधाननीधनाशनमरुकि वसुला ॥ यज्ञायानमिना दवी यज्ञाय वृद्धि वृद्धिनि ॥ विद्या
धनिमिवाहु ॥ श्रुता सर्वगुमाह का ॥ नूनी नानूनि दवी विद्या दाने श्रुत श्रुती ॥ रुचिमाह नमो भगवते सर्वरुचिः
नी ॥ दृष्टानुग्राहो निरिमा उग्र उग्रयना क्रमा ॥ दानयानमिना दवी वर्षधी दिव्यनूयौ नी ॥ निधान सर्वमागल्ला कीर्तिः
श्रीयज्ञेश्वरा ॥ दहनिमानो नी च शुभवनी सगुमाह का कृताकृता शनी नो दी को मानो विद्वन्नुयिनी ॥ वीर्ययानमो नादवी
जगदानदनाचमि ॥ नायसि उग्रनूयौ च ॥ द्विसिद्धि वनयदा ॥ धन्याय धाम हाराग ॥ अजिनाजिन विद्वमा ॥ जगदेकदि

गविद्या संग्रामागाननी श्रुता ॥ क्रतियानमिना दवी शीलनी ध्यानं ध्यायनी यज्ञनी यज्ञधानी यज्ञमासनमासनी ॥ सद्ध
नूयौ महानाहमवर्षयराकनी ॥ वेनाममिधनि दवी यज्ञाय कृता नमि ॥ निधान कृदमानूरा ध्याना मानधनयिया
ने धारुकमहा आदी दिवारु नमरुचिनी ॥ मातनी सर्ववृद्धाना नलधन श्रुत श्रुती ॥ शुभगारा विनि दवी राया रावदि
वर्जनी ॥ वेनयकि विनगाव दिधि निद्रुद निरिंदनी सर्वमालानां सफयाना नक्रा ममि ॥ वाक्नी वेदमागायगु
मना गुमवा सिनी ॥ मनश्च नी विसाना की वरुव मविहानिनी ॥ तथा गतिमहानम्या वजिनी धर्म धानिनी ॥ कर्म धनः
धनि विद्या विद्वक्ता लारु मदनी ॥ वाधनि सर्वसत्त्वानां वाधक कुरु श्रुत श्रुती ॥ ध्याना विमूर्किसंयनी ॥ अद्वयाद्वयराविनी

मा ध्यानिमिरुषतस्मा॥ उं नमो रगवत्सर्वे जे ला क्युगि विमिष्टाय वृद्धाय नमः॥ नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥
२ गृहसमस्तमना वरासस्य नमः गतिगगनस्य रावविशुद्धा उं श्री वीजययनि शुद्धा अरिषिके तु मां सर्वे नथा गताः स गगनवन
वननामृता रिषके महामूढा मनुयदेः॥ उं आः रुन २ आयुसं ध्यानिमिष्टा ध्याय २ विष्ठा ध्याय २ गगनस्य रावविशुद्धा उं श्री वीज
जययनि शुद्धा सहस्रनस्मि संवादिता सर्वे नथा गता वला कि निवद्या नमिनाय निघुनिमिष्टा सर्वे नथा गता मात दक्षमिरुमि
यनिमिष्टा सर्वे नथा गता दया धिष्ठा नाधिधिगता उं मूढ २ महामूढा वज्रकाय ननयनि शुद्धा सर्वे काय ननयनि शुद्धा यनिनि
वर्तय ममाय विशुद्धा सर्वे नथा गता समया नाधिष्ठा ता उं मुनि २ महामुनि विमनिमहा विमनिमिष्टा मति २ महामति ममति सुम

तिरुथगारुतकाटियनिसद्विस्तुविशुद्धा उं हं जय २ विजय २ स्मन २ स्मन २ स्मनय २ सर्वे मूढा नाधिष्ठा नाधिधिगता उं
सद्व २ वृद्ध २ वज्र २ महामूढा वज्र गदे विजय गर्ह वज्र काला गर्ह वज्र हं वज्र संरु वज्र वज्र विमिष्टा वज्र वज्र मम मनी नं स
र्वे सत्ता नाके काययनि शुद्धि रुवगु मम सर्वदा सर्वे गतियनि शुद्धि शुभमम सर्वे नथा ध्या मां समाधा सयनु उं वृद्धा २ सिद्धा २ वा
ध्याय २ मायय २ विमायय २ ध्याय २ विष्ठा ध्याय २ समान् भावय २ समननमि यनि शुद्धा सर्वे नथा गता दया नाधिष्ठा
नाधिधिगता उं मूढ २ महामूढा महामूढा मनुयदसाहा॥ ॐ यसा कूलयुग सर्वे नथा गता श्री वीजययना नाम ध्यान निमहा मूढ
रुद्धं निवान विनिरुमघना सनी लिखिता रुजयग वा ज्ञानय वा क विवेक मध्या कुरुमाक्षि लसंस्तुया मनुल मूढा ना

३

गृह्यगननवद्वगुनमृगगननमृगगननद्वगुननद्वगुननगमृगमृयगद्वगुनि॥ ॐमानिभक्तुयदानिरुवंगि॥ गयथा॥ ॐयदाक्रम
 सियनाक्रमसिउदयमसिवेनमसिअर्कमसिमर्कमसिउत्तमसिवनमसिशुलमसिवीवनमसिमहावीवनमसिअनध
 नमसिसाहा॥ ॐमानीवीदेवयथासांगाययउत्तयमागाययनाऊकुलनामागाययअऊनयदमागाययहृलिरयनामागाय
 यवीनरयमागाययअगिरयमागाययउदकरयमागाययसर्वयथयिकयथामिगुरयमागाययआकुलषूअनाकुलषू
 द्विगषूअमाद्विगषूमिहनामनऊआघनामनऊसर्धनामनऊ॥ गयथा॥ ॐआलाकालामदुलासखमृद्वितिनेऊ२मांसयनिवा
 नंसर्वसखाधुसर्वरयायउत्तःसाहा॥ ॐनमानलरुयाय॥ ॐनमारुगलेआयमानीवीदेवनाये॥ गसाहदयंसावरुयिषामि॥

२

गयथा॥ ॐवलानिवलालिवलाहमृवीसर्वद्वयद्वयानांचक्रमृवंदंधवंधसाहा॥ ॐमानीवीसाहा॥ ॐवनलवलालिवलि
 वलालिवलाहमृविमृर्वद्वयद्वयानांचक्रमृवंदंधवंधसाहा॥ ॥आयमानीवीनामभाननीसमाफ॥ ॐ
 ॐनमारुगवलेआयगुहमारुकाये॥ नवंमयाअमकस्मिभमयरुगवात्रदकवणांमदानगर्याविहनतिस्माअनक
 दवनागयऊनाऊसगयवीसूनगनूउकिन्ननमहानगायसांनादिनसासांगनवृद्धवृष्टमिशुकगनिश्चननाहृककुदि
 ॥ अष्टाविशतिनऊगादिरिःसयमानामहावजसमयालंकानवृहाधिविगमिहसूननियर्णअनकवाधिसखसहसुःसाई
 ॥ गयथा॥ वजयातिनांचनामवाधिसखनमहासखना॥ वजयलुनचनामवाधिसखनमहासखना॥ वजवेनावननचनाम

कमलाद्रि हा नीति हलिक गि। श्री मति हलियि कुल॥ लभयल भल भवा दनि सोड विरु काल या। म कया ल धालि नि क
 ल। दानिय म द गिरिय म ना क सिरु गग सनिय गि दू। थ मंग वृ यं धू य दी यं वलि ने व डं य दा स्या मि न क थ म म सर्व सखा
 श्रु सवे रु या य द वा स्या। जी व कु व र्ष शर्त य श्रु कु श न दा शर्त सि द्धु कु म म म कु य दा ॥ सा हा ॥ ना शे स्व सि दि वा स्व सि म
 धा दि न सि न स सि सर्व म हा ना र्ग सर्व व द्वा दि स कु म ॥ न दू था ॥ ॐ ति वि ति कि ति हि ति मि ति नि ति म ति। आ उ द्या उः
 द द्या उ हलिलि च कु नि ह वि व गा ति व गु ति यां शु यि शा वि नि व र्ष मि आ ना हि मि उ ना हि मि त्र ला म ला त्र ल म ल क
 ल न ल गिलि गिलि म ल म ल गि म ति म द म द म द म ॥ ॐ दि मि हि वि स्र द्ध य य ल वि म ल रु ल रु ल अ श्व म र्षि कालि का

११

र ग वान् शा वृ मू नि स्र था ग गा द हं स म्भ वृ द्धः सु ह द या क नू सा वि की ति त ना म न शि जालं नि श्च र्य य न व र्य ग रा मं मृ द्धिय व श य नि
 स्मा ग्ग थ ल ला द व न सर्व ग हा आ दि द्या द या उ ल्हा य र ग व न श्वा वृ मू नि स्र था ग गा म ह न स म्भ वृ द्ध म र्वा रिः दि द्या यू ज रिः यू ज यि
 ला य न्ना ज न्नि य स्र वृ गा ज लि यू गा रु त्वा र ग व न न म व मा रु णा अ नू गृ ही ता व र्य र ग व ना न था ग न ना म ह ना सं म्भ वं मृ द्ध न न द श य
 पुर ग वा ना द हं ध र्मा य या र्य सा म शी रु ता न स्र ध र्मा रा न क म्भ न क्रा क र्या मः गु क्री य नि गान सं य नि गृ हं य नि या न सं श्रु ति स्र स्र य न न
 द लु य नि हा नं श म्भ य नि हा नं वि ष दू ष सं वि ष ना श नं शी मा व द न नी व व के क र्या मः ॥ अ थ व ल र ग वान् शा वृ मू नि स्र था ग गा द हं
 स म्भ वृ द्वा ग हा नो यू ज म ग्ग श्र रा व न स्मा ॐ म धा वृ य स्र हा ॥ ॐ शी गा श व स्र हा ॥ ॐ न का ग क मा ला य स्र हा ॥ ॐ वृ द्वा य स्र हा ॥

ॐ लोमासादाय स्वाहा ॥ ॐ अमृता लोमाय स्वाहा ॥ ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा ॥ ॐ नादव स्वाहा ॥ ॐ अमृताय स्वाहा ॥ ॐ आनिकनव स्वाहा ॥
 ॥ यथा नृकर्मवर्णरुदनदिशः ॥ यदि शिवा गवमगुलमत्वा द्वादशगुलयमानं कृत्वा लिखन् कर्त्तुं काकु द्वादशगुलयमानं ॥ य
 तु स्नानं साहितं कृत्वा गानवक्रं समन्वितं करुणां गन्धमधुमिश्रकमलायनिकं कमलमगुलकयितयदवलात्कनं गायत्रय
 धनं तु जात्यां गिनकमलधनं नृकवर्णसहस्रसूर्यकाटिसिद्धनवर्णसमगजामालिनविशदं अस्यादयत्रीनशतनं कृद्गुण
 यो ॥ ॐ मधाल्काय आदित्याय नमः स्वाहा ॥ पूर्वस्यादिगिनककमलायनियुयश्वमगुलकसामावाक्यं धर्म्मतिहायः
 गिनकवर्णजडामकूटधनं तु जात्यां कृद्गुणयया वा अक्रसूत्रकमगुलधना अस्यागोवाशय्याद्युगादनशतनं ॥ ॐ यः

ॐ अमृताय स्वाहा ॥ दक्षिणस्यादिगि शुक्रकमलायनिवदनगवमगुलकरिङ्ग अंगानश्वनकव
 र्णनक्रमकूटी शक्तिवनवनदहस्रशतन अस्यादयमावरकशुददनं वा ॥ शुशुनूध्रयं ॥ ॐ नकागसाकलकमालाय अ
 गानाय नमः स्वाहा ॥ यश्चिमाया गिनकयशायनिकृष्णगुनगवमगुलकवक्रवानीवृद्धस्यागोवाशय्याद्युगादनशतनं कृद्गुण
 अक्रसूत्रकमगुलधनं शतनमत्मा मृगमायकिसना ध्यागवमगुल ॥ ॐ नाजयूत्रवृद्धसूर्यगवर्णयवृद्धाय नमः स्वाहा
 ॥ ॐ लूनस्यादिगि गिनकमलायनिवदनगवमगुलकयनिवाजकागुनशुवगककायै नवर्णशतनकसामावाक्यं अक्रसू
 त्रकमगुलधनः अस्यादयशतनं श्रीलं वा मधुध्रयधुनं वा ॥ लाहिरिवर्णयनिर्गमाय लोमासादाय वृहस्पतये नमः

३१

सा ह्य॥ अथ यादिनिन कयसा यनिवउ न गच्च मलुल ककुः यां शु यरु व गधानि ला श्रील धवल वस्त्र उदा म कृ टा क्रा सु
 य क म लु ल धनः अथ श्रील ला ऊनां कयन धूयं ॥ उं नमः अ सु ना ल मा य शुद्ध विन उ शु का धि य न य न मः सा ह्य॥ ने अथा दि
 नि नि यं क जा य नि नी ल व उ न ग च्च म लु ल क नि नि श्र न कृ र्ण व र्ण क य न का रू य पी ग उ दा म कृ र म लु अ कृ र म लु श्री य नि का ध नः ॥
 ला ज न म लु मा य रु क कि स नः ॥ ध या ग च्च न सः ॥ उं कृ र्ण व र्ण स नि ला य नि नि श्र ना य न मः सा ह्य॥ वा य या दि नि न का ला जा य नि
 ग ग ग च्च म लु ल क ना हः का या नि का ना जा व र्ण व र्ण नि ला द द हा न वि न थ रु या न का ला च न य ग ड द्वा क ला ला रु कृ टी कृ न यं चः
 व र्ण म ध म लु ग ना रु जा र्ण य उ स य क म ला रि न य रि ना अ स द य मा द्या ॥ मि व ला ऊ नं गि ल कृ र्ण ला वा ॥ वि ल्व धू या उं न मः वि

३३

कृ गान ना य न धि ना नि न ना रु व रि त्रा ऊ नि ला य अ म ल धि या य न मः सा ह्य॥ उं न मः अ थ न का स ना न हा य नि म्बु क ग च्च म लु ल वा
 ला का रु व ना क रु ध म व र्ण कृ र्ण ज लि ना गा कृ ति धू य रू रु गः अ स धू ग य न क ला ऊ नां स रू न स धू यं ॥ उं न मः धू मा ग व र्ण स
 नि ला य जा रि के ग व न मः सा ह्य॥ म लु ल य र्ण द्वा ल व द्वा रु ग वा ना द क्रि ल द्वा न व ज या निः य धि म द्वा ल ला क ना धः उ रु न द्वा
 न म उं श्री कृ मा न रु गः ॥ य र्ण रु न का ल स र्व ग हा य र्ण द क्रि ल का ल स र्व ल कृ ग द क्रि ल य क्रि म का ल स र्व य द र्ण ॥ य धि मा रु ल
 का ल रु द्वा लि का म हा वि शाल ग नी ला ल न रि मू र्वा ष ड्वा रु रु का य न वा र्णान मू डा ॥ द क्रि ल य द्वा न ल कृ ना वा म या ग ग कि ध
 जा न ल म कृ टी नि व उ य र्ण का य वि षा ॥ व ड्वा ग नां वा द ग व र्ण का नां स र्व ल का ल रु धि ना म लु ल य र्ण द्वा न वा द्वा रु ग ना ग स द धि

[illegible][illegible]

३।

उयीजरुयंनरुविष्मि।जानोजानोजानिस्मभारुविष्मि।सर्वगुहायुजिगाधरुविष्मि॥
 सर्वगुहासाधुरुगवानिगिदुत्वायुहाम्याकहिनाजरुवन॥
 सत्वाःसावसवोवगीययसदवमानुषामनगवर्हेशुलाकारुगवगारुवितमरुनदनिनि॥
 मधन।यनिस्माय॥
 जसोधर्मीसुगनगदिनैयर्थनरुकिरोवासावाहिनेकथमयेयदयादगगाऊनवाडेकाद्वयेयवेननिष्पयंश्रवादायाप्रवाते
 यूयवृक्षासूरुतनगगावाधिसत्वंक्रममुः॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 51